www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महान संकल्पों की महान परिणति

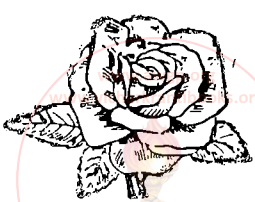

-श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महान संकल्पों की महान परिणति

बीज खाद पानी का सहयोग पाकर वृक्ष बनता है और संकल्प को कर्म की सहायता से सफलता के लक्ष्य तक पहुँचने का गौरव प्राप्त होता है। इच्छायें सभी की उठती हैं। मन सभी चलाते हैं। ऊँची उड़ानें उड़ने और रंग-बिरंगे सपने देखने वालों की कमी नहीं। उपलब्धियों और विभूतियों के लिए ललचाते रहने वाले लोगों की ही बहुलता है। इनमें अधिकांश को मनोरथों की पूर्ति न होने के कारण खिन्न और निराश ही देखा जाता है। कल्पनायें स्वप्न हैं। मनोरंजन भर उनसे हो सकता है। भविष्य में सुखद स्थिति आने की रंगीनी जुड़ जाने से कल्पनायें ललचाने वाली तो बन जाती हैं पर उनकी पूर्ति नहीं हो सकती। मनोरथ पूरा होने का भी एक विज्ञान है। एक निर्धारित राजमार्ग है, उस पर न चला जाय अनिश्चित मनःस्थिति में बहकते और अनिर्णीत दिशाधारा में भटकते रहा जाय तो मंजिल तक पहुँचना कैसे सम्भव हो सकता है।

महत्वपूर्ण सफलता पाने के लिए वही रीति नीति अपनानी पड़ती है जिसे बुद्धिमान किसान अपनाते और धन धान्य से कोठे भरते हैं। कृषि कर्म में बीजारोपण मुख्य है। कितने दिनों में, क्या फसल उपजेगी इसकी एक रूपरेखा उसी दिन बन जाती है जिस दिन बीज बोया जाता है। जो बीज बोया गया है। उसके उगने से लेकर पकने तक की एक सुनिश्चित रूप रेखा होती है। उसके लिए कब, क्या किस परिमाण में साधन जुटाने और श्रम लगाने की आवश्यकता पड़ेगी इसका एक व्यवस्थित चित्र सामने होता है, उसकी पूर्ति के लिए क्रमबद्ध प्रयत्न होते रहते है। प्रगति की दिशा में बढ़ने तथा सफलता तक पहुँचने का पथ प्रशस्त होता रहता है। प्रत्येक छोटे बड़े काम में यही रीति-नीति अपनानी पड़ती है। महान कार्यों में तो इस उपक्रम को और भी अधिक दृढ़तापूर्वक अपनाना पड़ता है। बीजारोपण की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपमा संकल्प से दी जा सकती है। संकल्प का तात्पर्य कल्पना की रंगीन उड़ानों से ऊंचा उठकर किसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सुनिश्चित निर्धारण करना है। इसके उपरान्त उसे पूरा करने के लिए जो लम्बी मंजिल पार करनी है—जो साधन जुटाने हैं उन ' स्वरूप सामने आता है। सामने स्पष्ट रूपरेखा होने और साधनों एवं प ्थितियों को देखते हुए उसे किस गति से कितने समय में पूरा करना है। तथ्य सामने आता है। आवश्यकता की स्पष्टता प्रेरणा देती है कि ता का मूल्य चुकाने के लिए अभीष्ट तत्परता बरती जाय। इन्हें जुटाने के लिए तत्परता बरती जाती है तो सफलता निकट खिचती चली आती है। लक्ष्य की दूरी घटने और मनोरथ को पा लेने का यही सनातन मार्ग है। इससे क्रम में अनायास—अप्रत्याशित रूप से उपलब्धियां किसी के घर में छप्पर फाड़कर बरस पड़ी हों ऐसा तो कदाचित ही कभी-कभी —अपवाद रूप में देखने को मिलता है।

हम सवनवयुग के उपासक हैं। सत्युग के अवतरण की प्रतीक्षा करते हैं। वर्तमान विपन्नता हमें अरुचिकर और असह्य है। अवाँछनीयतायें व्यक्ति और समाज पर बेतरह लद गई हैं। उनने सन्तुलन बिगाड़ कर रख दिया है। सुख शान्ति अभीष्ट है पर सामने शोक सन्ताप ही आ खड़े होते हैं। सोचते ऊपर उठने की है पर दुर्भाग्य की विडम्बना उलटे दल-दल की कीचड़ में धकेलती दबोचती चली जाती है। स्थिति निराशा जनक है प्रगति की अपेक्षा करते हैं पर हाथ में दुर्गति ही लगती है। इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की जा रही है। अन्धकार से प्रकाश की ओर चलने और पतन को उत्थान में परिवर्तित करने की आकांक्षा जन-जन की है। यही है समय की पुकार। इसे पूरा करने के लिए जागृत आत्माओं को ही अग्रिम-पंक्ति में खड़ा होना होगा। वही हो भी रहा है। युग निर्माण परिवार के परिजन इन दिनों युग परिवर्तन की मुहीम संभाले हुए हैं। लम्बी मंजिल इन थोड़े ही दिनों में मिल-जुलकर पार कर ली गई है। जो शेष है उसकी सफलता का सुनिश्चित आश्वासन नियति ने दिया है। यह विश्वास दिन-दिन सुदृढ़ होता जाता है कि शान्ति का युग आकर रहेगा। मानवी गतिविधियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में शालीनता का समावेश होगा। अपनी इसी धरती पर सुख-शान्ति की परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी। हर किसी के लिए हँसते-हंसाते स्नेह और सन्तोष से भरा पूरा जीवन बिता सकने का अवसर रहेगा। साधनों की न पहले कमी थी-न अब है और न भविष्य में रहने वाली है। कमी सज्जनता की पड़ रही है। उसे पूरा करने के लिए जागृत आत्माओं की—प्राणवान आदर्शवादियों की सक्रियता नियोजित होगी तो कोई कारण नहीं कि उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए नियोजित हो रहे प्रयास सफलता के लक्ष्य तक न पहुँचें।

युग निर्माण योजना के प्रयत्नों ने स्वल्पकाल में ही सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन के लिए प्रयासों को आशातीत सफलता के स्तर तक पहुँचाने का कीर्तिमान स्थापित किया है। जो हो चुका है उसका परिचय जिन्हें भी है वे विश्वास करते हैं कि सृजन शिल्पियों के प्रस्तुत प्रयत्न कल नहीं तो परसों अपनी धरती पर सुख शान्ति की परिस्थितियों का अवतरण करके रहेंगे। निराशा का कुहासा घटते हुए और आशा भरा प्रकाश मुस्कराते हुए हम सब अपनी इन्हीं आँखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जो गहराई से नहीं देख सकते और लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते, उनके लिए यह कोई दैवी वरदान या सिद्ध चमत्कार हो सकता है पर जिन्होंने प्रगति का विधान पढ़ा है और सफलताओं की पृष्ठभूमि समझी है, उनके लिए इसमें कुछ भी अद्भुत अनुपम अप्रत्याशित दिखाई नहीं पड़ता। संकल्प यदि प्राणवान हों और उन्हें सघन कर्मनिष्ठा का परिपोषण मिलता रहे तो उनके फलित होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है।

शास्त्र कहते हैं ब्रह्मा ने संकल्प किया कि अकेलापन उसे अखरता है वह अपने को अनेक बनाकर अपने आपके साथ क्रीड़ा-कल्लोल किया करेगा। एकोहं बहुस्याम' की श्रुति इसी रूप से इस सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करती है। जीव विज्ञानी अपने समस्त अन्वेषण के आधार पर चेतना विकास का एक ही आधार बताते हैं कि प्राणी के भीतर आकांक्षा उत्पन्न हुई और अनुकूल कलपुर्जे उनके शरीर तथा मन में उगते चले आये। आकांक्षा में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असाधारण चुम्बकत्व होता है। उनकी आकर्षण शक्ति अपने क्षेत्र में ग्रह तारकों को परस्पर बांधे रहने वाली चुम्बकीय शृंखला से कम सामर्थ्यवान् नहीं है। प्राणियों में जब-जब जितने परिमाण में आकांक्षा जितनी अधिक आकुलता के साथ उत्पन्न हुई हैं तब-तब उतनी ही मात्रा में अनुकूल क्षमता भीतर से विकसित हुई है, पुरुषार्थ जागा है और उसी अनुपात से बाह्य जगत से साधन सामग्री क्रमशः खिचती घिसटती चली आई है। प्राणि जगत् की प्रगति का यह संक्षिप्त तथ्य इतिहास है। विकाश के गर्भ में उफनते इसी आधार को हम हर क्षेत्र की प्रगति में समाया संजोया देखते है।

जीव शास्त्रियों के अन्वेषण इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि इस धरती पर जब जीवन आरम्भ हुआ तब वह एक कोषीय अमीबा जैसी अदृश्य प्राणियों की स्थिति में था। उनमें से जिसमें प्रगति की जितनी आकाँक्षा भड़की उसी अनुपात से उनकी शारीरिक बनावट और मानसिक क्षमता विकसित होने लगी और वे अपनी मूल स्थिति की अपेक्षा तेजी से अधिक साधन सम्पन्न बनने लगे। अपने पुरुषार्थ से उन्होंने सुविधा सामग्री खोजी और अनुकूल परिस्थितियों का सृजन किया। जिन प्राणियों में यह आकांक्षा—संकल्प क्षमता जितनी तीव्र थी उन्हें उसी अनुपात से आगे बढ़ने और साधन सम्पन्न बनने का अवसर मिलता चला गया। जिनमें उत्साह और साहस जितना कम था उनकी प्रगति उतनी ही मन्द बनी रही। साधनों की न सृष्टि के आदि में कमी थी न अब हैं। प्रगति पथ न तब कठिन था और न अब सरल है। प्रश्न पुरुषार्थ का था। नियति ने आरम्भ से ही प्राणियों को सुविधा प्रदान करने में आरम्भ से ही उदार नीति अपनाई है और वह अन्त तक अपने उस उदार उपक्रम को अपनाये रहेगी। जीवाणु चेतना का प्रतिनिधि होने के कारण जन्मजात रूप से अधिपति और अधिकारी है। प्रकृति का परमाणु सदा से उसका इच्छानुवर्ती अनुचर रहा है और सदा तक अपनी निष्ठावान् स्वामि भक्ति का परिचय देता रहेगा। जीवन की सत्ता इस सृष्टि में सर्वोपरि है उसकी माँग यदि गहरी हो तो उसकी पूर्ति में प्रकृति बाधक नहीं बनती। नियति रोड़े नहीं अटकाती। मात्र साहस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की जाँच पड़ताल करने के लिए अड़चनों के चौकीदार कुछ-कुछ पूछ-ताछ और रोक टोक करते रहते हैं। परिस्थितियों ने कभी किसी मनस्वी के मार्ग में इतनी कठिनाई उत्पन्न नहीं की जिसके कारण उसे अपना संकल्प बदलने और साइस छोडने को विवश होना पडे।

यह जीव जगत की प्रगति का विकाशवादी शोधकर्ताओं द्वारा किया गया पर्ववेक्षण और निकाला हुआ निष्कर्ष है। प्रगति का कारण परिस्थितियों को समझा भले ही जाता हो पर तथ्य तक पहुँचने वाले जानते हैं कि चमत्कार उत्पन्न करने की परिपूर्ण क्षमता मनःस्थिति में ही भरी पड़ी है। जड़-जगत की मूल सत्ता एनर्जी है। उसकी विद्युत शक्ति अपने विभिन्न रूपों में काम करती और भौतिक जगत की हलचलों को गति देती है। जीव जगत में यही कार्य संकल्प शक्ति है। प्राणियों का भूतकाल तत्वतः उनकी तत्कालीन मनः स्थिति का ही लेखा-जोखा है। आज भी जो जिस स्थिति में रह-रहा है। वह अपने ही संकल्पों का दण्ड पुरुस्कार भोगता है। भविष्य में जिसका जो बनेगा उसमें उथली मान्यता साधनों और परिस्थितियों को श्रेय या दोष देती रह सकती है। वस्तुतः जो कुछ होने जा रहा है। उसमें मनुष्यों की भली बुरी आकांक्षायें ही विकास या विनाश के आधार खड़े करेंगी। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इस सत्य के पीछे एक ही तथ्य काम करता है कि वह संकल्प शक्ति की प्रचण्ड ऊर्जा से सुसम्पन्न है। वह ऊर्जा इतनी प्रखर है कि सामान्य दीखने वाला व्यक्ति उसके सहारे महामानवों की ऐतिहासिक भूमिका निभाने में सहज ही समर्थ बन जाता है। नैपोलियन के शब्दों में इस प्राणवान् शक्ति के सामने सचमुच ही असंभव नाम का शब्द उसके अपने शब्दकोश में है नहीं।

इसका एक निकटतम और हस्तामलकवत् प्रयत्क्ष प्रमाण अपना युग निर्माण अभियान है। उसका शुभारम्भ कैसे हुआ, इसका आदिम इतिहास बहुत कम लोगों को मालूम है। एक व्यक्ति के अन्तःकरण में युग परिवर्तन की नव-निर्माण की स्फुरणा अवतरित हुई। अवतरित इस अर्थ में कि उसके साथ प्रचण्ड उत्साह साहस और निश्चय की समन्वित शक्ति भी जुड़ी हुई थी। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्फुरणा देर तक अपनी अवतरण भूमि पर निःचेष्ट नहीं बैठी रही वरन् उसने अग्रगमन की—गतिशील होने की ऐसी हलचल उत्पन्न करदी जिसे दूसरे शब्दों में आकुलता कह सकते हैं। यह आकुलता न तो अन्धी थी और न अनिश्चित। उसने अपना स्वरूप और कार्यक्रम बनाया। दिशाधारा का निश्चय किया। उसी की परिपक्वता युग निर्माण योजना है। इस क्रान्तिकारी तूफान का प्रथम दर्शन सर्व विदित बहु चर्चित "युग निर्माण सत्संकल्प" में हुआ। सर्वप्रथम यही है अपने मिशन अभियान का अरुणोदय—प्रभात दर्शन। इसके बाद का सारा घटनाक्रम लगभग वैसा ही है जैसा कि सूर्य का अग्नि पिण्ड क्रमशः ऊँचा चढ़ता—प्रखर होता और ऊर्जा बखेरता चला आता है। अभियान के तीस वर्षों के इतिहास को एक शब्द में सत्संकल्प का विकाश विस्तार कह सकते हैं। विचार पूर्ण—दृढ़ निश्चय जब कर्म निष्ठा के साथ जुड़ते हैं तो उनकी अग्रगामी गतिशीलता आँधी तूफान जैसी होती है।

संकल्प का दूसरा चरण गायत्री यज्ञ की क्रिया-प्रक्रिया के साथ प्रारम्भ होता है। हवन अग्निहोत्र तो पहले भी होते थे। उस सांस्कृतिक क्रिया-कृत्य का प्रचलन चिरकाल से चला आया है। पर युग निर्माण मिशन ने उसमें एक ऐसे अद्भुत तथ्य का समावेश किया जिससे गायत्री यज्ञ और युग निर्माण अभियान को एक दूसरे का पूरक बनने की स्थिति उत्पन्न हो गई। मिशन के द्वारा नियोजित गायत्री यज्ञ की अपनी मौलिक विशेषता है इसलिए उन्हें पण्डिताऊ अग्निहोत्रों के समतुल्य होते हुए भी तथ्यतः सर्वथा भिन्न भी समझा जा सकता है। अपनी यज्ञ योजना के पीछे कितने ही प्राणवान संकल्प जुड़े हुए हैं, उन्हें कार्यान्वित होने का जहां जितना अवसर मिल जाता है वहाँ उन्हें उसी परिमाण में सार्थक हुआ मान लिया जाता है। अपने गायत्री यज्ञों में देव-दक्षिणा को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है। देव-दक्षिणा का अर्थ है अपने स्वभाव अभ्यास में जड़, जमाये बैठी हुई अवाँछनीयताओं में से न्यूनतम एक का परित्याग। यह परित्याग सर्व प्रथम संकल्प के रूप में ही दृश्यमान होता है। श्रोतागण अपने दुर्गुणों में से एक को यज्ञाग्नि में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होमने का संकल्प देवताओं की उपस्थिति में लेते रहे हैं। इसी प्रवाह का प्रतिफल यह हुआ है कि दुष्कृत्यों के प्रति अवमानना की प्रक्रिया विकसित हुई है। कषाय-कल्मषों के दुष्परिणाम पर अधिक ध्यान और परिशोधन के प्रयास द्रुतगामी होते चले गये हैं। व्यक्ति की मनःस्थिति समाज की परिस्थिति के परिशोधन का प्रयास कितने बड़े परिणाम में सफल हुआ है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण लाखों करोड़ों व्यक्तियों के जीवन क्रम में आश्चर्यजनक परिवर्तन के रूप में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। युग निर्माण योजना की इस महती सफलता के पीछे गायत्री यज्ञों के अवसर पर देव-दक्षिणा देने की-दुरित दुर्गुणों को त्यागने की पुण्य प्रक्रिया ने अवाँछनीयताओं को साहस भरी चुनौती दी है और आश्चर्य जनक परिवर्तन प्रस्तुत किये है। मनुष्य में देवता उत्पन्न करने का उद्घोष दूसरे शब्दों में दानव को निरस्त करना भी कहा जा सकता है इस दिशा में मिशन को आशातीत सफलता मिली है। अपने गायत्री यज्ञ इस अर्थ में पूरी तरह सफल हुए हैं कि उनके माध्यम से असंख्यों को अपने अवाँछनीय दिशा क्रम से उलझने का अवसर सहज ही मिल गया। भाव भरे धर्मानुष्ठानों के आधार पर उत्पन्न यज्ञीय वातावरण में मनुष्यों को देव बनने के लिए दानव से पिण्ड छुड़ाने की आवश्यकता समझाई गई और अन्तरात्मा की प्रसुप्त श्रद्धा जगाई गई तो उसने यह सहज स्वीकार कर लिया कि कषाय कल्मषों के दुष्ट दुर्गुणों से पीछा छुड़ाना ही श्रेयस्कर है। अशुभ का परित्याग ही शुभ की --शिव की प्राप्ति है। यज्ञीय वातावरण में देव-दक्षिणा के रूप में---नशा, माँस जुआ, चोरी, दहेज, मृत्युभोज, छुआ छूत, आलस्य प्रमाद जैसी आदतों को छोड़ा गया तो उस रिक्त की पूर्ति सद्गुणों से होती गई।

श्रेय गायत्री यज्ञों को--युग निर्माण अभियान को---आयोजन कर्ताओं या अन्य किसी को दिया जा सकता है पर तथ्यतः सारा चमत्कार संकल्प शक्ति का है वह रहती तो हर मनुष्य में है पर नियोजित निरर्थक या अनर्थ मूलक प्रयोजनों में रहती है। उसे बदला जा सके तो दिशा उलटती है और शोक सन्ताप को दुःखद परिस्थितियाँ उलट कर सुख-सौभाग्य की झांकी कराने लगती है।

क्र. २१० प्र० युग निर्माण योजना मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा मू० ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org